|  |
| --- |
| 03. März 2024 |
| **03. Fastensonntag B** |
| Erste Lesung: Ex 20,1-7 (oder 20,1-3.7-8.12-17); Zweite Lesung: 1 Kor 1,22-25; Evangelium: Joh 2,13-25 oder |
| Erste Lesung: Ex 17,3-7; Zweite Lesung: Röm 5,1-2.5-8; Evangelium: Joh 4, 5-42 (oder 4,5-15.19b-26.39a.40-42) |
|  |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 491, 1+2! | Ich bin getauft und Gott geweiht |
|  | GL 543, 1-3 | Wohl denen, die da wandeln |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 128 | Herr, erbarme dich |
|  |  |  |
| Antwortgesang 1: | Ps19, 8-12 |  |
|  | Kehrvers: |  |
|  | GL 312, 7 | Herr, du hast Worte |
|  | (Psalmen-)Lied: |  |
|  | GL 381, 3!+4 | Die Sonne ist des Himmels Ehr |
|  | GL 449, 1+2 | Herr, wir hören auf dein Wort |
|  |  |  |  |  |
| Antwortgesang 2: | Ps 95, 1-2. 6-7c. 7d-9 |
|  | Kehrverse: |  |
|  | GL 53, 1 | Hört auf die Stimme des Herrn |
|  | GL 312, 8 | Wie der Hirsch |
|  | oder Lied (Kanon): |  |
|  | GL 397 | All meine Quellen |
|  |  |
| Ruf vor dem Evangelium: | GL 584, 9 oder GL 560, 1 oder GL 644, 6 |
|  | Vers 1: |
|  | *So sehr hat Gott die Welt geliebt,* |
|  | *dass er seinen einzigen Sohn hingab,* |
|  | *damit jeder, der glaubt, in ihm das ewige Leben hat.* |
|  | Vers 2: |  |
|  | *Herr, du bist der Retter der Welt.* |
|  | *Gib mir lebendiges Wasser,* |
|  | *damit mich nie mehr dürstet.* |
|  |  |  |
| Credo: | GL 801, 2 | Dein Tod am Kreuz |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 414, 1-4 | Herr, unser Herr |
|  | GL 268, 4-6 | Herr, nimm von mir  |
|  | GL 350 (Kanon) | Geist der Zuversicht, Quelle |
| Sanctus: | GL 129 | Heilig |
| Agnus Dei: | GL 206 | Lamm Gotte |
| Danksagung: | GL 429, 1+4+5 | Gott wohnt in einem Lichte |
|  | GL 421, 4 | Du hast mein Haupt getränkt |
| Schluss: | GL 453, 1! -4 | Bewahre uns, Gott |
|  | GL 746, 1+3+6 | Dich liebt, o Gott |